Regd. With the Registrar of News Papers of India at PUN BIL/2002/07848
Postal Reg. No. GDP-41/2017-19

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

मासिक

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

फ़रवरी 2020 ई०

Annual Subscription: Rs. 210/- (Per Issue: Rs. 20/-
(Weight : 50-100, grms / Issue)

मज्लिस अन्सारुल्लाह मलापूरम केरला द्वारा आयोजित तब्लीगी प्रोग्राम का दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह मलापूरम केरला द्वारा आयोजित तब्लीगी प्रोग्राम का आरम्भ दुआ के साथ किए जाने का दृश्य।

बंगाल में आयोजित पुस्तक मेला के अवसर पर आदरणीय मुजीबुर्रहमान साहिब नाज़िम जमाअती प्रचार करते हुए।

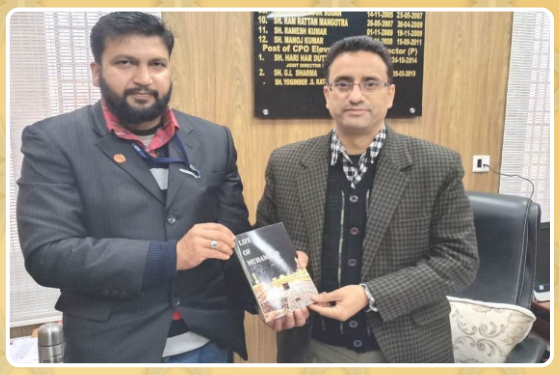

आदरणीय योगिंदर सिंह कटोच प्लानिंग आफ़िसर जम्मू को आदरणीय मुख़्तार अहमद ज़ईम मज्लिस अन्सारुल्लाह बुदानु जमाअती लिट्रेचर भेंट करते हुए।

तिथि 19 दिसम्बर 2019 ई. को आयोजित
मिसाली वकार-ए-अम्ल के
अवसर पर मस्जिद अनवार का एक दृश्य।

तिथि 19 दिसम्बर 2019 ई. को आयोजित
मिसाली वकार-ए-अम्ल के अवसर पर
मज्लिस अन्सारुल्लाह के सदस्य भाग लेते हुए
दफ़्तर मज्लिस अन्सारुल्लाह का एक दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह सिकन्दराबाद
द्वारा घंटासाला ज़िला कृष्णा में स्कूल
के विद्यार्थियों को नि:शुल्क नोटबुक
भेंट किए जाने का दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह ज़िला
वेस्ट गोदावरी के सदस्य
जमाअती लिट्रेचर भेंट करते हुए।

तिथि 28 नवम्बर 2019 ई. को जमालपूर में
आयोजित तरबियती इज्लास के
अवसर पर उपस्थित अंसार,खुद्दाम एवं अत्फ़ाल।

तिथि 28 नवम्बर 2019 ई. को जमालपूर में आयोजित तरबियती इज्लास के अवसर पर आदरणीय मुहम्मद याक़ूब जावेद, आदरणीय अब्दुल मोमिन राशिद नायब सदर प्रथम मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत, आदरणीय मुहम्मद युसुफ़ अनवर, आदरणीय वसीम अहमद तीमापूरी एवं मुबल्लिग़ इंचार्ज स्टेज पर विराजमान।

بسم الله الرحمن الرحيم   نحمده ونصلي على رسوله الكريم   وعلى عبده المسيح الموعود

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنصَارَ اللَّهِ

سورة الصف آيت ١٥

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 18   फरवरी 2020   Issue - 2

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
तनवीर अहमद मलिक
09781831652

मैनेजर
मक्सूद अहमद भट्टी
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
तसनीम अहमद बट्ट

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रवचन	3
सम्पादकीय - हस्ती-ए-बारी तआला - हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन - प्रत्येक व्यक्ति अपने दायित्व को समझे	6
पुस्तक परिचय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रूहानी ख़ज़ाइन - भाग प्रथम	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ○ وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ○ وَ وَالِدٍ وَّ مَا وَلَدَ ۙ○
لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ○

अनुवाद - सावधान ! मैं इस नगर की क़सम खाता हूं। जबकि तू इस नगर में (एक दिन उतरने वाला है। और पिता की और जो उसने संतान पैदा की। नि:सन्देह हमने मनुष्य को एक लगातार परिश्रम में (लगे रहने के लिए) पैदा किया।

(सूर: अल-बलद आयत 2 से 5)

दर्सुल हदीस

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْزِلُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اِلَى الْاَرْضِ، فَيَتَزَوَّجُ، وَيُوْلَدُ لَهٗ۔

अनुवाद - हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमरू रज़ीयल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया - ईसा इब्ने मरयम अर्थात मसीह मौऊद धरती पर अवतरित होगा तथा विवाह करेगा तथा उसके घर में संतान पैदा होगी।

(मिशकात भाग 4, किताबुल फ़ितन बाब नज़ूल ईसा)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

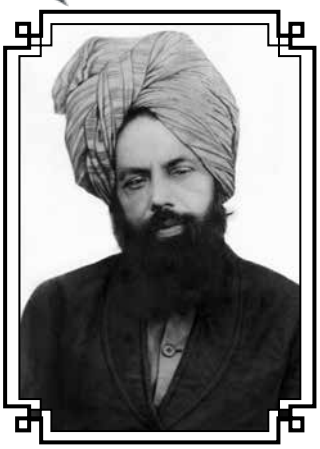

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

"ख़ुदाए रहीम-ओ-करीम बुज़ुर्ग-ओ-बरतर ने जो हर एक चीज़ पर अधिपत्य रखता है (जल्ला शानुह व अज़्ज़ाइस्मुहू) मुझको सम्बोधित करके फ़रमाया-

मैं तुझे एक रहमत का निशान देता हूँ उसी के मुआफ़िक़ जो तू ने मुझसे मांगा, सो मैंने तेरी तज़रोंआत को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से बपाया-ए-क़बूलियत जगह दी और तेरे सफ़र को (जो होशियारपुर और लुधियाना का सफ़र है) तेरे लिए मुबारक कर दिया, सो क़ुदरत और रहमत और क़ुरबत का निशान तुझे दिया जाता है, फ़ज़्ल और एहसान का निशान तुझे अता होता है और फ़तह और मुज़फ़्फ़र की कलीद तुझे मिलती है। ए मुज़फ़्फ़र तुझ पर सलाम ! ख़ुदा ने यह कहा, ता वो जो ज़िन्दगी के ख़्वाहाँ हैं मौत के पंजे से निजात पावें और वो जो क़बरों में दबे पड़े हैं बाहर आवें और ता दीन-ए-इस्लाम का शर्फ़ और कलामुल्लाह का मर्तबा लोगों पर ज़ाहिर हो और ता हक़ अपनी तमाम बरकतों के साथ आ जाए और बातिल अपनी तमाम नहूसतों के साथ भाग जाए और ता लोग समझें कि मैं क़ादिर हूँ जो चाहता हूँ सो करता हूँ और ता वो यक़ीन लाएँ कि मैं तेरे साथ हूँ और ता उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के दीन और उसकी किताब और उसके रसूले पाक मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इंकार और तकज़ीब की निगाह से देखते हैं, एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह ज़ाहिर हो जाए।

सो तुझे बिशारत हो कि एक वजीह और पाक लड़का तुझे दिया जाएगा, एक ज़की ग़ुलाम (लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही तुख़्म से तेरी ही ज़ुर्रियत व नस्ल से होगा। ख़ूबसूरत पाक लड़का तुम्हारा मेहमान आता है। उसका नाम अन्मवाईल और बशीर भी है। उसको मुक़ददस रूह दी गई है और वह रिज्स से पाक है, वो नूरुल्लाह है। मुबारक वो जो आसमान से आता है, उसके साथ फ़ज़्ल है जो उसके आने के साथ आएगा। वह साहिबे शिकोह और अज़मत और दौलत होगा। वह दुनिया में आएगा और अपने मसीही नफ़्स और रूहुल हक़ की बरकत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलमातुल्लाह है क्योंकि ख़ुदा की रहमत और ग़यूरी ने उसे अपने कलिमाए तमजीद से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम होगा और दिल का हलीम और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी से पुर किया जाएगा और वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके माने समझ में नहीं आए) दो शुम्बा है मुबारक दो शुम्बा, फ़र्ज़न्द दिलबन्द गिरामी अर्जमन्द, मज़हरुल अव्वल वल आख़िर, मज़हरुल हक़ व उला कानल्लाहा नज़ला मिनस्समा। जिसका नज़ूल बहुत मुबारक और जलाले इलाही के ज़हूर का मूजिब होगा। नूर आता है नूर जिसको ख़ुदा ने अनी रज़ामन्दी के इत्र से ममसूह किया। हम उसमें अपनी रूह डालेंगे और ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह जल्द जल्द बढ़ेगा और असीरों की रुस्तगारी का मूजिब होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत पाएगा और क़ौमें उससे बरकत पाएँगी तब अपने नफ़्सी नुक़ते आसमान की तरफ़ उठाया जाएगा। व काना अमरम मक़ज़िय्या।" (इश्तिहार 20 फ़रवरी, 1886)

सम्पादकीय

हस्ती-ए-बारी तआला - हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का अस्तित्व ख़ुदा तआला के अस्तित्व का एक मुंह बोलता प्रमाण है क्योंकि इस्लाम के सत्यापन की अभिव्यक्ति के लिए की गईं हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं को स्वीकार करते हुए अल्लाह तआला ने स्वयं भविष्य वाणी के माध्यम से यह शुभ सूचना फ़रमाई थी कि-

"كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَآءِ **अर्थात जिसका अवतरण अत्यंत मुबारक तथा जलाल-ए-इलाही का कारण होगा"**

अल्लाह तआला की कृपा से पेशगोई की निश्चित अवधि में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ीयल्लाहु अन्हु पैदा हुए तथा पेशगोई के समस्त प्रमाण आपकी पवित्र ज़ात में पूरे हुए तथा मानो आप रज़ी. के शुभ आगमन को जैसे ख़ुदा का अवतरण कहा गया है। आप रज़ी. ने हस्ती बारी तआला के विषय में सन्देहों का बड़ी सरल तथा सुगम भाषा में निवारण फ़रमाया है। मार्च 1913 में "दस दलाएले हस्ती बारी तआला" के शीर्षक से नास्तिकों की एक विशेष आपत्ति "यदि ख़ुदा है तो हमें दिखा दो, हम मान लेंगे" का उत्तर दिया है तथा ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर विश्वास करने के लिए दस प्रमाणों को पेश किया है।

आज दुनिया में लोग भोग-विलास एवं भौतिकवाद में लिप्त होकर ख़ुदा तआला के अस्तित्व को भूल रहे हैं। चूँकि विज्ञान ने आधुनिक युग में प्रत्येक चीज़ का आधार प्रमाण पर रखा है इस लिए दिन प्रतिदिन ख़ुदा तआला की हस्ती का ही इंकार करने लगे हैं। कुछ लोग प्रत्यक्ष रूप में घोषणा करते हैं तथा कुछ लोग अपनी क़ौम तथा देश के भय से इंकार तो नहीं करते किन्तु दिल से ख़ुदा पर विश्वास नहीं रखते। ऐसे लोग सवाल करते हैं कि यदि ख़ुदा है तो हमें दिखाई क्यों नहीं देता जबकि प्रत्येक वस्तु को पहचानने के साधन विभिन्न होते हैं। किसी भी रंग को देख कर हम पहचान सकते हैं परन्तु रंग को छू कर अथवा सूंघ कर कोई नहीं पहचान सकता। कुछ ऐसी वस्तुएँ हैं जिन्हें हम पाँचों इन्द्रियों के द्वारा भी नहीं पहचान सकते, उदाहरणत: बुद्धि, प्रेम, घृणा इत्यादि हैं जिन्हें हम अनुभव तथा प्रभाव से पहचान सकते हैं। जो व्यक्ति पवित्रता धारण करते हुए अपने रब की स्तुति ज़बान से करके फिर अमली रूप में इस अनुभव को प्रमाणित करे तो ख़ुदा तआला तक पहुंच सकता है। चूँकि ख़ुदा तआला अपनी शक्ति एवं अपने सामर्थ्य के माध्यम से दुनिया के सामने मौजूद है, आप रज़ी. फ़रमाते हैं-

"यद्यपि मनुष्य की दृष्टि उसको देखने में असमर्थ है किन्तु वह स्वयं अपनी अत्यधिक शक्तियों तथा सामर्थ्यों से विभिन्न रूप में प्रकट होता है, कभी

प्रकोप के निशानों से, कभी नबियों के माध्यम से, कभी दया के माध्यम से तथा कभी दुआ की क़बूलियत से"

(दस दलाएले हस्ती बारी तआला, अन्वारुल उलूम, भाग 1 पृष्ठ 416)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आज दुनिया को विनाश से बचाने के लिए सचेत कर रहे हैं कि लोग अपने रचीयता को पहचानें, उसकी बन्दगी करें, उससे सहायता मांगें। अत: हम सबका कत्र्तव्य है कि हम इस सन्देश को पूरे विश्व में फैलाएँ। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला फ़रमाते हैं-

"दुनिया को तबाही से बचाने का यही एक मार्ग है कि लोग रहमान ख़ुदा को समझें अन्यथा रहमान ख़ुदा के उपकारों का आदर न करने के कारण ऐसी आपदाओं में घिर जाएँगे जो कभी बीमारियों के रूप में आती हैं, कभी एक दूसरे की गर्दनें मारने के रूप में आती हैं, कभी एक क़ौम दूसरी क़ौम पर दुष्टता के साथ चढ़ाई करके उनके साथ अत्याचार करके अज़ाब को दावत देती हैं। कभी अल्लाह तआला की ओर से धरती पर तथा आकाश से अज़ाब आते हैं। अत: दुनिया को इन अज़ाबों से बचाने का प्रयास करना हमारा काम है जिसका अतिउत्तम साधन, जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुंचाना है, फिर अल्लाह तआला पर मामला छोडऩा है क्योंकि मरे हुओं को जीवन देना अल्लाह तआला का काम है। अत: यह एक भारी दायित्व है जो अहमदियत में शामिल होने के बाद हम पर आता है"

(ख़ुत्बा: जुम्अ: फ़र्मूदा 19 जनवरी 2007)

दुआ है कि अल्लाह तआला हम सबको हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस मुबारक इरशाद पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नियाज़

❁❁❁

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road
KANNUR-1 (KERALA)
Mobile : 09895655426

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya
CALICUT (KERALA)

सदर मजलिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

प्रत्येक व्यक्ति अपने दायित्व को समझे

आज धरती के पट पर केवल एक ही गिरोह है जो मूल रूप से जमाअत कहलाने के योग्य है और वह अहमदिया जमाअत है। सय्यदना ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के समस्त निर्देशों के अनुसार जब हम सब मिलकर काम करेंगे तो उसके सुन्दर परिणाम तुरन्त सामने आएंगे। क़ुर्आन करीम में सामूहिक इबादत को बड़ा महत्त्व दिया गया है तथा हदीसों से प्रमाणित होता है कि सामूहिक इबादतों का सवाब भी अधिक रखा गया है। इस्लाम के कलमे को बुलन्द करने के लिए, सामूहिक प्रयासों की सराहना करते हुए अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है-

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ○

अनुवाद - अल्लाह तो उन लोगों को प्रिय रखता है जो उसके लिए पंक्तिबद्ध होकर लड़ते हैं, जैसे वे एक दीवार हैं जिसकी सुदृढ़ता के लिए उस पर सीसा पिघला कर डाला गया हो।

ईद बिन जुबैर रहमुल्लाह फ़रमाते हैं कि जब तक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़ें न बनवा लेते शत्रु से लड़ाई शुरु न करते थे। अत: पंक्तिबद्ध होने की शिक्षा मुसलमानों को अल्लाह की दी हुई है। एक दूसरे के साथ मिले खड़े रहें, दृढ़ संकल्प रहें तथा हटें नहीं। तुम नहीं देखते कि इमारत का बनाने वाला नहीं चाहता कि उसके निर्माण में कहीं ऊँच नीच हो, टेढ़ी तिरछी हो अथवा छेद रह जाएँ, इसी प्रकार अल्लाह तआला नहीं चाहता कि उसके कामों में मतभेद हो। युद्ध के मैदान में तथा नमाज़ के समय मुसलमानों की सफ़ें बनाना स्वयं उसी की ओर से है। अत: तुम अल्लाह तआला के आदेश का पालन करो जो आज्ञा पालन करेगा यह उसके लिए सम्मान तथा बचाओ साबित होगा।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, आयत 4 सूर: अस्सफ़)

जिस महान उद्देश्य के लिए अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नियुक्त फ़रमाया है उसकी प्राप्ति के लिए पूरी जमाअत को मिलकर यथासम्भव प्रयत्न करने की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य के लिए मजलिस अन्सारुल्लाह तंज़ीम के संस्थापक हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने जमाअत में पाँच ज़ैली तंज़ीमों की स्थापना

फ़रमाई, आप फ़रमाते हैं-

"हमारी जमाअत के हवाले यह काम किया गया है कि हमने पूरी दुनिया का सुधार करना है, पूरे विश्व को अल्लाह तआला की चौखट पर झुकाना है, पूरे विश्व को इस्लाम और अहमदियत में दाख़िल करना है .... ..जब हम पूरी जमाअत के लोगों को एक निज़ाम में जोड़ लें तो उसके बाद हम बाहर की दुनिया के सुधार की ओर पूर्ण रूप से ध्यान कर सकेंगे। इस भीतरी सुधार तथा तंज़ीम को पूरा करने के लिए मैंने ख़ुद्दामुल अहमदिया, अन्सारुल्लाह तथा अतफ़ालुल अहमदिया, ये तीन जमाअतें स्थापित की हैं और ये तीनों अपने उस उद्देश्य में जो इनकी स्थाना का मूल लक्ष्य है उसी समय सफल हो सकती हैं जब अन्सारुल्लाह, ख़ुद्दामुल अहमदिया तथा अतफ़ालुल अहमदिया उस मूल उद्देश्य को अपने सम्मुख रखें जो حَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ (सूरः अलबक़रः 145) में बयान किया गया है कि हर एक व्यक्ति अपने कत्तव्य को समझे तथा फिर रात और दिन उस कर्तव्य की अदायगी में इस प्रकार व्यस्त हो जाए जिस प्रकार एक पागल और मजनून सारी दिशाओं से अपना ध्यान हटाकर केवल एक बात के लिए अपने पूरे समय को लगा देता है"

(ख़ुत्बः जुम्अः 29 सितम्बर 1944 द्वारा अलफ़ज़्ल 11 अक्तूबर 1944)

आदरणीय सदस्यगण अन्सारुल्लाह भारत, अंग्रेज़ी में एक विख्यात कहावत है, Unity is strength अतः क़ुर्आन मजीद की शिक्षा के अनुसार मजलिस अन्सारुल्लाह भारत कार्य-पद्यति प्रणाली के अनुसार हर महीने नियम पूर्वक हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला की इच्छा एवं निर्देशानुसार समस्त ओहदेदार सेवा करें तथा सदस्यगण सहयोग करेंगे तो हम दुनिया का सुधार करने वाले होंगे। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मजलिस अन्सारुल्लाह भारत

❁❁❁

Mobile : 9572858090, 9955553631
NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE
Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030
زبیر احمد شحنہ
ZUBER
Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

पुस्तक परिचय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

रूहानी ख़ज़ाइन - भाग प्रथम

वे ख़ज़ाएन जो हज़ारों साल से मदफ़ून थे अब मैं देता हूँ अगर कोई मिले उम्मीदवार

हमारे प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं-

"आजकल के ज़माने में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सातु वस्सलाम की किताबों को भी पढ़ने की ओर ध्यान देना चाहिए तथा उनसे भी लाभ प्राप्त करना चाहिए, यह भी क़ुर्आन करीम की एक व्याख्या एवं तफ़सीर है जो हमें आप अलै. की किताबों से मिलती है।

इसकी ओर ध्यान देना चाहिए तथा ये किताबें अवश्य पढ़नी चाहिएँ और इन्हीं किताबों से आपको प्रमाण मिल जाते हैं लोगों की आपत्तियों के उत्तर देने के, और यही आजकल तरीक़ा है आपकी मजलिसों से लाभान्वित होने का, आपकी संगति से लाभ प्राप्त करने का, कि पहले भी मैं कहता रहा हूँ कि आप अलै. की पुस्तकें पढ़ने की ओर अधिक से अधिक ध्यान दिया जाए और इससे हमें विरोधियों की आपत्तियों के उत्तर भी मिलेंगे और क़ुर्आन करीम के ज्ञान का भी बोध प्राप्त होगा"

(ख़ुत्बः जुम्अः 18 जून 2004, ख़ुत्बाते मसरूर, भाग दो, पृष्ठ 414, 415)

निवेदन

यह केवल अल्लाह तआला की कृपा एवं उपकार है कि आज हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का अध्ययन ऑन लाईन जमाअती वैब साईट पर कर सकते हैं तथा ऑडयो भी सुन सकते हैं। जो दोस्त उर्दू पढ़ना नहीं जानते वे ऑन लाईन इंगलिश में भी अध्ययन कर सकते हैं तथा सय्यना हुज़ूर-ए-अनवर के इरशाद पर जमाअतों में क़ायम लाईब्रेरियों से लाभान्वित होते हुए रूहानी ख़ज़ाइन का अध्ययन किया जा सकता है। दोस्तों को इसकी ओर ध्यान और रूचि पैदा करने के लिए रूहानी ख़ज़ाइन की जिल्दों का संक्षिप्त परिचय पेश करने की श्रंखला जारी की जा रही है। आशा है कि जमाअत के दोस्त लाभ प्राप्त करेंगे।

(नज़ारत इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया, क़ादियान)

रूहानी ख़ज़ाइन के पहले भाग में बराहीन-ए-अहमदिया के चार भाग उपलब्ध हैं, पृष्ठों की कुल संख्या 673 है। बराहीने अहमदिया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सबसे पहली पुस्तक है इसको लिखने का शुभारम्भ 1878 ई. के अन्त तथा 1879 ई. के आरम्भ में हुआ, यद्यपि इसके इश्तिहार 1877 ई. में प्रकाशित होने लगे थे किन्तु नियमानुसार काम 1879 में होने लगा। यह किताब जो आपकी दीन से मुहब्बत की यादगार तथा आपका एक शाहकार है, कई भागों में छप कर प्रकाशित हुई।

बराहीने अहमदिया का पहला तथा दूसरा भाग 1880 ई. में तथा तीसरा भाग 1882 ई. में और चौथा भाग 1884 ई. में पहली बार प्रकाशित हुआ। यह वह ज़माना था जबकि अंग्रेज़ी साम्राज्य अपनी सम्पूर्ण चरम सीमा पर था तथा ईसाई मिश्नरी पूरी शक्ति के साथ ईसाईयत की तबलीग़ में व्यस्त थे। इस्लाम और इस्लाम

के संस्थापक के विरुद्ध सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की गईं तथा करोड़ों की संख्या में फ्री पम्फ़लैट बाँटे गए। उनकी प्रगति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि 1851 ई. में ईसाईयों की संख्या भारत में 91 हज़ार थी और 1881 ई. में चार लाख सत्तर हज़ार तक पहुंच गई। पंजाब के लैफ़्टिनैन्ट गवर्नर चार्लस एच सन ने 1888 ई. में ईसाई मिश्नरियों के एक जलसे में सम्बोधन करते हुए बताया कि इस समय हिन्दुस्तान में ईसाईयों की संख्या लगभग दस लाख तक पहुंच चुकी है (परिचय रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 3) दूसरी ओर आर्य समाज और ब्रह्मो समाज की तहरीकों ने जो अपनी चरम सीमा पर थीं, इस्लाम को अपनी आपत्तियों का निशाना बनाया हुआ था। इस प्रकार इस्लाम दुश्मनों के घेरे में था तथा इन सब तहरीकों का उद्देश्य इस्लाम को कुचल डालना और क़ुर्आन मजीद तथा इस्लाम के संस्थापक की सच्चाई को दुनिया की निगाहों में संदिग्ध करना था। आर्य समाज वेदों के बाद किसी इलहाम को नहीं मानते थे तथा ब्रह्मो समाज वाले सिरे से ही अल्लाह की ओर से इलहाम के इंकारी थे तथा केवल बुद्धि को मोक्ष की प्राप्ति के लिए पर्याप्त समझते थे और शिक्षित मुसलमान यूरोप के भ्रामक दर्शन शास्त्र से प्रभावित होकर तथा ईसाई देशों की प्रत्यक्ष भौतिक सफलताओं को देख कर इलहामे इलाही के इंकारी हो रहे थे और इस्लाम के विद्वानों का गिरोह आपस में एक दूसरे के साथ कुफ्र का युद्ध लड़ रहा था।

इस्लाम की इस असहाय तथा बेबसी का चित्रण मौलान अलताफ़ हुसैन हाली मरहूम ने 1879 ई. में अपनी मुसद्दस में यूँ खींचा है-

रहा दीन बाक़ी न इस्लाम बाक़ी
इक इस्लाम का रह गया नाम बाक़ी

फिर मिल्लते इसलामिया का एक बाग़ से उदाहरण देते हुए फ़रमाते हैं-

फिर एक बाग़ देखेगा उजड़ा सरासर
जहाँ ख़ाक उड़ती है हर सू सरासर
नहीं ताज़गी का कहीं नाम जिस पर
हरी टहनियाँ झड़ गईं जिसकी जल कर
नहीं फूल फल जिसमें आने के क़ाबिल
हुए रूख जिसके जलाने के क़ाबिल
यह आवाज़ पैहम वहाँ आ रही है
कि इस्लाम का बाग़े वीराँ यही है

ऐसी अवस्था में जबकि क़ुर्आन मजीद की वास्तविकता तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई स्वयं मुसलमान कहलाने वालों पर भी संदिग्ध हो रही थी और कई उनमें से ईसाईयत की गोद में आ गिरे थे। आपने बराहीने अहमदिया किताब लिखी जिसमें आपने क़ुर्आन मजीद के कलामे इलाही तथा सम्पूर्ण किताब तथा अद्वित्तीय होना और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपने नबुव्वत व रिसालत के दावे में सच्चा होना अकाटय प्रमाणों से साबित किया और इन प्रमाणों के विरुद्ध किसी इस्लाम के दुश्मन के ऐसे प्रमाणिक उत्तर एक तिहाई या चौथाई या पांचवाँ भाग पेश करने वाले के लिए दस हज़ार रुपए का पुरस्कार निश्चित किया तथा प्रत्येक इस्लाम के विरोधी को मुक़ाबले की दावत दी।

बराहीन-ए-अहमदिया के द्वारा पैदा क्रांति

इस किताब के प्रकाशन से मुसलमानों के साहस में वृद्धि हो गई, इस्लाम से विमुख होने का तूफ़ान थम गया। कई मुस्लिम विद्वानों ने इस पुस्तक की सराहना की। अत: मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने जो अह्ले हदीस सम्प्रदाय के मुख्या समझे जाते थे, इस पुस्तक

का सारांश लिखने के बाद अपनी प्रशंसा इस प्रकार व्यक्त की है-

"अब हम अपना विचार अत्यंत संक्षेप में तथा बिना किसी अतियुक्ति के अभिव्यक्त करते हैं। हमारे विचार में यह पुस्तक इस ज़माने में तथा वर्तमान परिस्थितियों में एक ऐसी किताब है जिसके समान कोई पुस्तक आज तक इस्लाम में प्रकाशित नहीं हुई और भविष्य का पता नहीं لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا और इसका लेखक भी इस्लाम के माली व जानी व क़लमी व भाषाई व कथनी समर्थन में ऐस दृढ़ संकल्प निकला है जिसका उदाहरण पहले मुसलमानों में बहुत ही कम पाया गया है।

हमारे इन शब्दों को कोई एशिया की अतियुक्ति समझे तो हम को कम से कम एक ऐसी किताब बता दे जिसमें इस्लाम के समस्त विरोधी सम्प्रदायों, विशेषत: आर्य तथा ब्रह्मो समाज के साथ इतना घोर मुक़ाबला पाया जाता हो और दो चार ऐसे इस्लाम के सहायक व्यक्तियों के नाम बताए जिन्होंने इस्लाम की माली व जानी व क़लमी व भाषाई सहायता के अतिरिक्त वर्तमान आर्थिक सहयोग का भी बीड़ा उठा लिया हो तथा इस्लाम विरोधी तथा इलहाम के इंकारियों के मुक़ाबले में पौरुषीय सुदृढ़ता के साथ यह दावा किया हो कि जिसको इलहाम की सत्यता में सन्देह हो वह हमारे पास आकर इसकी अनुभूति एवं दर्शन कर कर ले और इस अनुभव एवं दर्शन का अन्य समुदायों को भी मज़ा चखा दिया हो" (इशाअतुस्सुन्न: भाग 7, पृष्ठ 169,170)

(शेष भाग अगले अंक में)

❁❁❁

SONET
SOLUTIONS
PRIVATE LIMITED
No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043
तालिबे दुआ :
MUSADDIQ AHMAD
Mobile : 098451-98560
Tel : +91 (80) 41636612
Web : www.sonetsolutions.in

Mob: 9008510546
Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Maqbool Ahmed Cell : 9949310679
: 9949209561
Plant Medicine
Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles
H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53